International Journal of Engineering Research & Management Technology
( Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) ISSN: 2348-4039
Volume 11, Issue-6 November-December- 2024 Impact Factor: 7.09
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

# पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी द्वारा रचित 'श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्यम मे पात्र और चरित्र–योजना

**डॉ. विनीता शर्मा, अध्यक्षा,**

**संस्कृत विभाग, मोनाड विश्वविद्यालय हापुड़**

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी द्वारा रचित 'श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्यम्' में जवाहर लाल नेहरू नायक के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। इनके अतिरिक्त मोतीलाल नेहरू, महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीयऔर गोपालकृष्ण गोखले आदि पात्रों का भी प्रयोग हुआ है। जवाहर लाल नेहरू की माता जी स्वरूप रानी और उनकी पत्नी कमला रानी प्रमुख स्त्री पात्रों के रूप में प्रयुक्त हुई है। इन भारतीय पात्रों के अतिरिक्त रचनाकार ने एकाधिक विदेशी पात्रों का भी प्रयोग किया है। मोतीलाल नेहरू और महात्मा गांधी प्रमुख सहपात्रों के रूप में प्रयुक्त हुये हैं क्योंकि दोनों ही पात्र महाकाव्य एवंमहाकाव्य के कथाविन्यास में लगभग अन्त तक बने रहते हैं। इस प्रकार यह सभी स्त्री–पुरूष सहपात्र नायक को देशप्रेम और मानवसेवा के कार्यो के लिये आदि से अन्त तक प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहते हैं। नायक के गुणों और कार्यो का विवेचन करने से पहले नायक की अवधारणा और नायक के प्रकारों का ज्ञान आवश्यक है। धनन्जय ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दसरूपक' में निम्नलिखित लक्षण देते हुये नायक के विभिन्न भेदों का भी विवेचन किया हैं, उनके अनुसार–

**'नेता विनीतो मधुररस्त्यागी दक्षः प्रियवदः**

**रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढ़वंशः स्थिरो युवा**

**बुद्धत्साहस्मृतिप्रज्ञकलामानसमन्वितः**

**शूरा दृढश्च तेजस्वी शास्त्रत्रचक्षुश्च धर्मिकः'**

धनंजय ने अपने काव्यशास्त्रिय ग्रन्थ दशरूपक के जो लक्षण गिनाये हैं, लगभग सभी लक्षणगत गुण जवाहर लाल नेहरू के चरित्र में मिलते हैं। नेहरूजी अपने समय के विश्वप्रसिद्ध वक्ता, धैर्य, संयम, साहस, स्वालम्बन, संतोष, सहनशीलता, उदारता, सहृदयता, सान्विकता, मधुरता, और सदाशयता आदि मानवीय गुणों से समन्वित रहे हैं। वह दूरदर्शी और पारदर्शी सव्य–वक्ता और कर्तव्य–परायण महापुरूष रहे हैं। संस्कृत–महाकाव्यों में जो नायक अपने मानवीयगुणों और कार्यो के कारण आदर्श माने गये हैं नेहरू में आदर्श महापुरूष के सभी गुण विद्यमान हैं। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। वह मन, वाणी और कर्म की एकता में विश्वास रखते हैं। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व करूणा, सत्य, प्रेम, अहिंसा, दयाऔर ममता आदि मानवीय गुणों से निर्मित और विकसित हुआ है। वह अपनी सम्पूर्ण जीवन शैली और कार्यशैली में मानवतावादी मूल्यों से अनुशासित रहा है। वह एक आदर्श नेता मानवतावादी साहित्यकार और अनुकरणीय नेतृत्व–क्षमता वाले महापुरूष है।

धनंजय ने दसरूपक में संस्कृत–महाकाव्यों और नाटकों में वर्णित और प्रयुक्त चार प्रकार के नायकों में से धीरोदात्त नायक को उत्कृष्ट और अनुकरणीय माना है। धीरललित, धीरप्रशान्त, और धीरोद्धत नायकों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं बनता। दसरूपककार ने

धीरोदात्त नायक में समस्त रचनाधर्मी वैश्विक मूल्यों पर आधारित मानवीय गुणों का समावेश माना है। नेहरू अपने सम्पूर्ण आचरण और व्यवहार में धीरोदात्त नायक के गुणों से मण्डित हैं। आधुनिक नाट्यशास्त्रियों और काव्यशास्त्रियों ने नायक के निम्नलिखित लक्षण निर्धारित किये हैं–

1. महाकाव्यगत कथा का आरम्भ, विकासऔर अन्त जिस पात्र के साथ होता है, वह नायक कहलाता है।

2. महाकाव्य के सम्पूर्ण कथानक का नियमन और नियन्त्रण करता है। महाकाव्यगम समस्त कार्यो का संचालन और परिपालन करता है। जिस महान उद्देश्य के लिये संघर्षरत रहता है उस कार्य की पूर्णता में सफलता प्रदान करता है।

3. महाकाव्यगत अन्य पात्र उसके मानवीय गुणों और कार्यो का अनुमोदन और अनुगमन करते हैं।

4. महाकाव्य में वर्णित और प्रयुक्त फल या उद्देश्य की प्राप्ति नायक को ही होती है।

नायक के उपर्युक्त सभी गुण और लक्षण श्री जवाहर लाल नेहरू में विद्यमान हैं। अतः निर्विवाद रूप से उन्हें इस महाकाव्य का नायक कहा जा सकता है। महाकाव्यगत घटनाओं का निस्संग दृष्टि से विश्लेषण–विवेचन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री जवाहर लाल नेहरू सबसे पहले आदर्श मानव हैं इसके बाद वह आदर्श सेनानी और भारत के आदर्श नेता हैं।

**1.1 पात्र–चयन के कार्यक्षेत्र–**

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने अपने प्रसि□द्ध महाकाव्य 'श्रीजवाहर ज्योतिर्महाकाव्यम्' की रचना में जिन पात्रों का चयन किया है, वे पात्र समाज के अलग–अलग कार्यक्षेत्रों से सम्बन्ध रखते हैं। रचनाकार ने अपने इस महाकाव्य की रचना में शिक्षा, साहित्य, धर्म, दर्शन, और राजनीति आदि सामाजिक क्षेत्रों से बहुवर्गीय पात्रों का चयन किया है। रचनाकार ने अपने इस महाकाव्य में दो प्रकार के पात्रों का प्रयोग किया है–

1. भारतीय समाज व्यवस्था से सम्बद्ध पात्रों का प्रयोग

2. ब्रिटिशकालीन समाज व्यवस्था से सम्बद्ध पात्रों का प्रयोग

उपर्युक्त दोनों प्रकार के पात्रों में भारतीय समाज व्यवस्था से सम्बद्ध पात्रों का चयन एकाधिक कार्यक्षेत्रों से किया गया है। मोतीलाल नेहरू विधिशास्त्र से सम्बन्ध रखते थे। वे अपने समय के भारत के प्रख्यात अधिवक्ता रहे हैं। मदन मोहन मालवीय का सम्बन्ध भी न्याय और विधिक्षेत्र से रहा है। साथ ही साथ पत्रकारिता से जुड़े रहने के कारण उनका कार्यक्षेत्र साहित्य–रचना भी रहा है। गोपालकृष्ण गोखले और लाला लाजपत राय मानवसेवी समाजशास्त्री रहे हैं। इनका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारत रहा है। स्वरूप रानी और कमला रानी घरेलू महिलायें होते हुये भी तत्कालीन विषमतामूलक राजनीति का विद्रोह करने के लिये कारागार भी जाती है। अतः इन दोनों का चयन भी समाजसेवा के कार्यक्षेत्र से किया है। इन प्रमुख पुरूष और स्त्री पात्रों के अतिरिक्त इस महाकाव्य की रचना में कवि ने कृषिक्षेत्र, श्रमक्षेत्र, और विभिन्न कर्मकार–क्षेत्रों से कृषकों, श्रमिकों, दलितों और निर्धनों का चयन किया है। उद्योग क्षेत्र से सम्बद्ध पूँजीपतियों से भी आर्थिक सहायता ली गयी है। अतः पूँजीवादी व्यवस्था से जुड़े औद्योगिक कार्यक्षेत्र का भी संकेत किया गया है। रचनाकार ने अपने महाकाव्य की रचना में भारतीय पात्रों के साथ–साथ विदेशी पात्रों का भी प्रयोग किया

है। ब्रिटिश शासकों और प्रशासकों का भी प्रयोग किया है। ब्रिटिश शासकों और प्रशासकों के साथ–साथ ब्रिटिश सैनिकों का भी प्रयोग किया है। इस प्रकार रचनाकार ने शासन–प्रशासन और सुरक्षा आदि कार्यक्षेत्रों से भी विदेशी पात्रों का चयन किया है। अपने देश के और ब्रिटेन के बहुवर्गीय पात्रों के चयन द्वारा कवि ने भारतीय समाज–व्यवस्था और पाश्चात्य समाज–व्यवस्था के प्रकार्य और प्रयोजनगत अन्तर को स्पष्ट किया है। दोनों प्रकार के पात्रों की मानसिकता जीवनशैली और कार्यशैली द्वारा सम्बन्धित कार्यक्षेत्रों के सामान्य और विशिष्ट गुणों को भी स्पष्ट किया गया है। सभी विदेशी पात्र मूलतः हिंसक प्रवृत्ति के हैं। भारतीयों का दमन करना, उनका शोषण करना, श्रमिकों और कृषकों को उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित रखना, ब्रिटिश शासको की कूटनीति है। विभिन्न राजनैतिक दलों को संरक्षण और प्रोत्साहन देना, भेदनीति द्वारा उनको परस्पर लड़ाना, देश का विभाजन कराना, दलित–मुस्लिम वर्ग और हिन्दू वर्ग तीनों को एक दूसरे से दूर करना उनके कूटनीतिक षडयन्त्रों का परिणाम है।

रचनाकार ने जिन भारतीय पात्रों का समाज के अलग–अलग कार्यक्षेत्रों से चुनाव किया है, वे सभी भारतीय पात्र, अपने–अपने कार्यक्षेत्रों को अपने मानवीय गुणों और कार्यो द्वारा आदर्शपूर्ण और अनुकरणीय बना देते हैं। वे अपने–अपने कार्यक्षेत्रों को सामान्यीकरण की प्रक्रिया से मुक्त करके विशेषीकरण की प्रक्रिया से जोड़ने का प्रयत्न करते हैं। यह प्रक्रिया कार्यक्षेत्र के वैशिष्ट्य के साथ–साथ व्यक्ति वैशिष्ट्य को भी निरूपित करती है।

**1.2 पात्रभेद–**

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने 'श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्यम्' में दो प्रकार के पात्रों का प्रयोग किया है–

1. प्रमुख पात्र
2. गौण या सहायक पात्र

प्रमुख पात्रों में महाकाव्य के नायक जवाहर लाल नेहरू के साथ–साथ मोतीलाल नेहरू, महात्मा गांधी, स्वरूप रानीऔर कमला रानी प्रमुख पुरूष और स्त्री पात्र हैं। इन सभी प्रमुख पात्रों का पं. जवाहर लाल नेहरू के साथ गहरा सम्बन्ध है। इनमें से पं. मोतीलाल नेहरू, स्वरूप रानीऔर कमला रानीपं. जवाहर लाल नेहरू के रक्त के सम्बन्धों पर आधारित प्रमुख पात्र हैं।पं. मोतीलाल नेहरू योग्य और आदर्श पिता हैं। स्वरूप रानी पूज्या माता हैं और कमला रानी कर्तव्यपराणया पतिसेविका और समाजसेविका आदर्श पत्नी हैं। ये तीनों ही पात्र महाकाव्य से सम्बन्धित मूल कहानी के अनिवार्य और अविभाज्य अंग हैं। मोतीलाल नेहरूऔर स्वरूप रानी जवाहर लाल नेहरू के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा–दीक्षा उनके वकालत–सम्बन्धी कार्य, वैवाहिक अनुष्ठानऔर राजनैतिक संघर्ष में सतत् रूप से सक्रिय भूमिका का निर्वाह करने वाले सशक्त पात्र हैं। श्री जवाहर लाल नेहरू की धर्मपत्नी कमला भी विवाह के बाद नेहरू के राजनैतिक जीवन को गति, दिशाऔर विस्तार देने वाली कर्मठ महिला हैं। वह जवाहर लाल नेहरू की पतिपरायणा पत्नी के साथ–साथ इन्दिरा गांधी जैसी लोकप्रिय पुत्री की आदर्श माँ भी हैं। वह एक साथ अनेक पारिवारिक सम्बन्धों का विवेकपूर्वक निर्वाह करती हुई राजनैतिक क्षेत्र में स्वाधीनता–प्राप्ति की लड़ाई लड़ने वाली साहसी महिला भी हैं। इस रक्त के सम्बन्धों पर आधारित पात्रों के साथ–साथ इस महाकाव्य में महात्मा गांधी के गुरू गोपाल कृष्ण गोखले, पं. जवाहर लाल नेहरू के धर्मगुरू महात्मा गांधी महत्वपूर्ण पात्रों में माने जायेंगे। महात्मा गांधी पं. जवाहर लाल नेहरू के मानवीय मूल्यों पर आधारित राजनैतिक व्यक्तित्व के निर्माता हैं। देश में सत्य, प्रेम और अहिंसा का प्रचार– प्रसार करके देश को मानवीय आधार पर एकता के सूत्र में बाँधने का सतत् प्रयत्न

करते हैं। महात्मा गांधी फलप्राप्ति को छोड़कर पं. जवाहर लाल नेहरू के साथ महाकाव्य के सहनायक माने जा सकते हैं। अन्य प्रमुख पात्रों में मदन मोहन मालवीय और जवाहर लाल नेहरू के प्रारम्भिक कथा में प्रखरी की तरह महत्व रखनेवाले प्रेरक और अनुकरणीय पात्र हैं। साइमन प्रिन्स ऑफ चार्ल्स और ऐलिजाबेथ आदि विदेशी पात्र सहायक पात्रों के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। इन पात्रों की अपनी स्वतन्त्र पहचान अपने कार्यक्षेत्रों से होती हैं। ऐलिजाबेथ ब्रिटेन की साम्राज्ञी रही हैं। उसके राज्यारोहण के उत्सव में जवाहर लाल नेहरू उपस्थित हुये हैं। साइमन कमीशन और रौलट ऐक्ट से जुड़े पात्रों की कार्यनीतियों का विरोध करके रचनाकार ने इन विदेशी पात्रों को राष्ट्रविरोधी पात्र माना है। ये विदेशी पात्र ब्रिटिश शासन–नीति का समर्थन करते हैं और उन नीतियों का भारत में बलपूर्वक कार्यान्वयन करते हैं। इस प्रकार इस महाकाव्य में वर्णित पात्रों को कार्यपद्धति के आधार पर दो प्रकार का माना जा सकता है–

1. अनुकूल प्रकृति के पात्र
2. प्रतिकूल प्रकृति के पात्र

दोनों प्रकार के पात्रों का अपना अपना महत्व होता है। विरोध और संघर्ष की प्रक्रिया दोनों प्रकार के पात्रों के स्वतन्त्र अस्तित्व और महत्व को निर्धारित करती है।

## 1.3 चरित्र–योजना–

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने स्वरचित 'श्री जवाहरज्योतिर्महाकाव्यम्' में जिन स्त्री–पुरूष पात्रों का प्रयोग किया है वे सभी भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में बहुचर्चित पात्र रहे हैं। ये सभी पात्र अपनी निःस्वार्थ सेवा, निश्छल देशप्रेम और मानव प्रेम के कारण चरित्र–निर्माण की प्रक्रिया से भी जुड़े रहे हैं। इन सभी पात्रों के गुण और कार्य पात्रों के गुण और कार्य इनके चरित्र–निर्माण के आणारस्रोत रहे हैं।प्रस्तुत महकाव्य में जिन पात्रों का प्रयोग हुआ है वे भारतीय इतिहास के निर्माण और विकास से जुड़े हुये महत्वपूर्ण पात्र रहे हैं।

देश को आजाद कराने में उनकी क्या रचनात्मक भूमिका रही है? इसका भी संकेत ही किया है प्रमुख पात्रों में मोतीलाल नेहरू और महात्मा गांधी की कार्य–योजना, कार्यक्रमों और कार्यपद्धति का विस्तार से वर्णन किया है और यह संकेत भी किया है कि मोतीलाल नेहरू और महात्मा गांधी ने अपने व्यवसाय की पवित्रता और लोकप्रियता की रक्षा ही नहीं की अपितु अपने चिन्तन और मानवसेवी कार्य व्यापारों से नयी दिशा भी प्रदान की। इन दोनोंप्रमुख पात्र–प्रयोगों के साथ–साथ रचनाकार ने स्वरूप रानी और कमला रानी स्त्री पात्रों के चरित्रगत स्वरूप को भी इंगित किया है। रचनागत इनके कार्य–व्यापारों से यह पता चलता है कि इन्होंने अपने गृहस्थ जीवन को इतना महत्व नहीं दिया जितना सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन को महत्व दिया। महाकाव्य में प्रयुक्त उपर्युक्त सभी प्रमुख स्त्री–पुरूष पात्रों की महत्ता, महाकाव्य के नायक नेहरू के चारित्रिक गुणों से जुड़ी हुई है। रचनाकार ने यह संकेत किया है कि नेहरू जन्म से ही अद्भुत शक्तियाँ लेकर समाज और देश में प्रविष्ट हुये थे। उनकी सम्पूर्ण जीवन शैली और कार्यपद्धति तत्कालीन भारत के परम्परागत उदार और उदात्त सांस्कृतिक मूल्यों से निर्मित और विकसित हुई थी।

## 1.4 पात्रों के स्वभाव, संस्कार, आचरण और व्यवहार–

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने 'श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्यम्' में मुख्यरूप से महाकाव्य के नायक जवाहरलाल नेहरू के बाल्यकाल, आरम्भिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, सामाजिक शिक्षाऔर राजनैतिक परिवेश से निर्मित और विकसित स्वभाव और संस्कार का यथार्थमूलक मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, लोकमान्य तिलक, मदन मोहन मालवीय, मौ. अली जिन्नाऔर सुभाषचन्द्र बोस के कार्यो की प्रकृति के आधार पर उनके स्वभाव और संस्कारों का संकेत अवश्य किया है। महाकवि ने अपने महाकाव्य में भारत की राजनीति से जुड़ेमृदुल स्वभाव वाले और उग्र स्वभाव वाले दोनोंप्रकार के स्वभाव वाले महापुरूषों का वर्णन किया है। सुभाषचन्द्र बोस, जिन्ना, और सुभाष से जुड़े अन्य सहयोगी अपने स्वभाव और संस्कार में कठोर रहे हैं। महात्मा गांधी, गोपालकृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय अपने स्वभाव और संस्कार में मृदुल और संयमित रहे हैं। सरदार वल्लभ भाई पटेल और मोतीलाल नेहरू दोनों ही अपने स्वभाव और संस्कारों में संयत और संतुलित रहे हैं। निश्चित रूप से ये सभी महापुरूष अपने स्वभाव और संस्कार से अपने आचरण और व्यवहार में पारदर्शी परिलक्षित होते हैं। जिन्ना और उसके समर्थक को छोड़कर देश को आजाद कराने के लिये भारत के जितने नेता लड़ रहे थे वे सभी अपने आचरण और व्यवहार में सांमजस्यवादी रहे हैं। उनहोंने जो सोचा वही कहा और जो कहा वही किया। इस प्रकार मन, वाणी, और कर्म की एकता ने मृदु स्वभाव वाले और उग्र स्वभाव वाले देशभक्त नेताओं को अपने आचरण और व्यवहार ने दूरदर्शी और पारदर्शी बना दिया। इस महाकाव्य में विदेशी शासन और प्रशासन से जुड़े शासक और प्रशासक मन, वाणी, और कर्म में अलग–अलग दिखाई देते हैं। यही कारण है कि इन विदेशी शासकों के आचरण और व्यवहार अविश्वनीय और अमानवीय रहे हैं। स्वभाव और संस्कार, आचरण और व्यवहार का नियमन और नियन्त्रण करते हैं। इस महाकाव्य के नायक जवाहर लाल नेहरू के स्वभाव और संस्कार अपने पारिवारिक परिवेश, लालन–पालनकी विधि के साथ–साथ आरम्भिक शिक्षा स्वाध्याय, अध्ययन की प्रकृति, धर्मग्रन्थों के प्रति अभिरूचि आदि से निर्मित और विकसित हुये हैं। जवाहर लाल नेहरू ने अपने जन्म से प्राप्त संस्कारों को कर्मयोग से सम्पूर्ण भूमण्डल पर प्रसारित किया और अपने सम्पूर्ण जीवन को उन्हीं संस्कारों के अनुरूप ढाला। वह अपने माता–पिता से अर्जित गुणों और कार्यो से संस्कारवान् बने। आरम्भिक जीवन में जिन–जिन महापुरूषों के जीवन चरित्र से उन्होंने अपने आचरण और व्यवहार सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया, उसमें बदायूँनगर निवासी मुबारक प्रमुख माने गये हैं। उस समय के भारतीय महापुरूषों के गुणों और कार्यो ने भी उनके स्वभाव, संस्कार–जन्य आचरण और व्यवहार का परिष्कार और परिमार्जन किया।

नेहरू का स्वभाव, अपने आचरण और व्यवहार मोतीलाल नेहरू के सुयोग्य निर्देशन में विकसित हुआ। धनी परिवार में जन्मे बच्चे प्रायः पथभ्रष्ट हो जाते हैं परन्तु मोतीलाल नेहरू के कठोर स्वभाव और मानवीय कार्यशैली ने नेहरू को सुयोग्य, कर्मठ, दूरदृष्टा और आदर्श शिशु बनाया। नेहरू की स्मरण शक्तिअद्भुतरही। उन्होंने बाल्यकाल में ही भारत के अनेक धर्मप्रधान पुराणग्रन्थों का भी अध्ययन किया। इन्होंने भी नेहरू के अपने आचरण और व्यवहार को मानवीय मूल्यों से जोड़ा। नेहरू युगदृष्टा और युगसृष्टा अपने संस्कारवान और मूल्यों पर आधारित प्रारम्भिक शिक्षा से बने। उनके आरम्भिक गुण ब्रूक महोदय की शिक्षा से गंभीर शान्त निश्छल और पवित्र बने। अपने माता–पिता को मद्यपान करते देखकर नेहरू का मन अस्थिर और विचलित हुआ और उनहोंने मदिरापान को रक्तपान मानकर उसके प्रति वितृष्णा का भाव व्यक्त किया। उन्होंने अपने माता–पिता की कार्यशैली का विरोध किया और कहा कि आप लोग मुझे कैसे संस्कार देना चाहते हैं? हैरो विद्यालय की शिक्षा ने उनको महान चिन्तक और विश्वप्रेमी बनाया। उनके गुणों और उनकी योग्यता से उनके शिक्षक इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने उन्हें अनेक पुरस्कार प्रदान किये, उनको प्रोत्साहित किया, हैरो के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी नामक महाविद्यालय में अध्ययन करते समय उन्होंने अपनी प्रतिभा,

ज्ञान, और योग्यता से वहां के शिक्षकों और छात्र–छात्राओं को इतना प्रभावित किया कि वहां के शिक्षा अधिकारियों ने उनहें बी.ए. ऑनर्स की डिग्री एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण किये बिना ही दे दी।

## 1.5 पात्रों के गुण–

इसी अध्याय के शीर्षक पात्र–चयन के कार्यक्षेत्र के अर्न्तगत यह स्पष्ट कर दिया है कि ब्रिटिश शासक प्रशासक और शासक अपने गुणों में अमानवीय क्रूर, हृदयहीन परिलक्षित होते हैं। झूठ बोलना, धोखा देना और भारतीय जनता को प्रताड़ित करना उनके गुण और कार्य रहे हैं। इस महाकाव्य में वर्णित महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू ऐसे प्रमुख पात्र रहे हैं जो अपनी शैली में मानवीय गुणों से अनुशासित रहे हैं और अपने कार्यो से देशप्रेम समाजसेवा और विश्वकल्याण की भावना से प्रभावित परिलक्षित होते हैं। इन प्रमुख पात्रों के गुण और कार्य इनके स्वभाव, संस्कार, आचरण और व्यवहार से प्रेरित और प्रभावित ही नहीं रहे हैं, अपितु अनुबन्धित और अनुशासित भी रहे हैं। महात्मा गांधी भारतीय राजनीति के युगपुरूष रहे हैं। उन्होंने भारतीय राजनीति को भारतीय आध्यात्मक और नैतिक आदर्शो से अनुबन्धित रखा है, उनका सम्पूर्ण जीवन मानव–कल्याण के लिये समर्पित रहा है। गांधीजी भारतीय स्वाधीनता के प्रवर्तक ही नहीं उसके भविष्य दृष्टा भी रहे हैं। वह बुद्धि की अपेक्षा हृदय से अधिक संचालित रहे हैं।

देशप्रेम और समाजसेवा उनके मानवीय गुणों पर आधारित महत्वपूर्ण कार्य रहे हैं। अंग्रेज शासकों ने भारतीय नेताओं को जब–जब देशसेवा और देशप्रेम से दूर रखने का प्रयत्न किया है, तब–तब गांधी व्यथित और पीड़ित हुये। तत्कालीन शासक वर्ग द्वारा दलित वर्ग के लिये अलग चुनाव की व्यवस्था करना महात्मा गांधी के लिये मातृभूमि का अपमान रहा। उन्होंने इस अत्याचार को दूर करने के लिये अनशन किया। उन्होंने तत्कालीन भारत में व्याप्त अज्ञानता और जड़ता को पूरा किया। उन्होंने ब्रिटिश शासकों के अत्याचारों, उनके हृदयहीन कार्यो, अन्यायऔर शोषण का भी विरोध सत्याग्रह विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और सविनय अवज्ञा आन्दोलन आदि अहिंसक कार्यो द्वारा किया। रोगशय्या से उठकर महात्मा गांधी ने रौलट एक्ट का विरोध किया। ऑंग्ल शासक इससे प्रभावित हुये, उन्होंने गांधी को आश्वासन दिया। उनके अन्यायपूर्ण कार्यो का पुनः विरोध करने के लिये उन्होंने सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन का आश्रय लिया। महात्मा गांधी ने अंग्रेज शासकों के मिथ्या आचरण, हठधर्मिता और भारतीयों के प्रति उनकी कटुता को दूर करने के लिये बार–बार सत्य, प्रेम और अहिंसा का मार्ग अपनाया और देशवासियों को करूणा अहिंसा और मानवता से जोड़ा। उन्होंने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया। मद्यपान का विरोध किया और दांड़ी यात्रा द्वारा अपने देश में ही नमक पैदा करके विदेशी वस्तुओं के प्रयोग का परित्याग किया। उनके सभी कार्य एक ओर अंग्रेज शासकों की जनता विरोधी नीतियों से उत्पन्न हुये थे दूसरी ओर शोषित, वंचित और त्रस्त भारतीय जनता से प्रेरित और प्रभावित रहे थे। महात्मा गांधी ने देश को आजाद कराने के लिये द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिये था वहां से असफल और निराश लौटने पर उन्होंने आमरण अनशन भी आरम्भ किया था। कांग्रेस सभा में उन्होंने हिन्दुस्तान पाकिस्तान के विभाजन को अस्वीकार कर दिया था। उन्होंने अपने गुणों और कार्यो द्वारा तत्कालीन राजनीति का परिष्कार किया। इस विवेचन की पुष्टि निम्नलिखित उदाहरणों से की जा सकती है–

**‘चयनेदलितानां यत् पार्थक्यं शासकैः कृतम**

**तेनातिपीड़ितो गान्धी आरेभेऽनशनव्रतम**

**मरणान्तव्रतेनास्य स्वान्त नूनं व्यकम्नत**

सर्वत्र–धंतमो व्याप्तं तस्याक्षणामार्गरोधेकम्

तदा श्री गान्धिनों देशे रोगश्य्यात उत्थिताः

रौलटैक्ट विरोधाय वायसेशमुपागयाः

श्रुत्वाऽपि गान्धिनो वातमिश्रुतां विदधन्नयय

मूकोन्मत्तजडैस्तुल्यं चाकरोदधादैमात्मनः

सत्याग्रहः समारबधस्तदा देशऽत्र भारते

कारागारेषु यातु ते सन्नद्धा देशवासिनः

सत्याग्रहस्य प्रारम्भे गतिरोधोऽभवच्च यः

तेन सर्वाणि कार्याणि निरूद्धान्यत्र भारते

यदा श्री गान्धिना दत्ता तयोर्योगाय सम्मतिः

अहिंसाऽसहयोगेडस्मिन् मिलिते ते उभे तदा

तत्रयद भाषणं दत्रं गान्धिना श्रीमहात्मना

श्रीजवाहरलालस्य न तद रूचिकरं त्वभूत

कर्तु सत्याग्रहं देशे निश्चितं देशभासिभिः

अहिंसात्मकरूपं च निर्देशे श्रीमहात्मनः

नकेवलं तदा देशे सत्याग्रहसुसाधकैः

लवणस्य करो भग्नो भङ्गः सविनयः कृतः

वैदेशिकसुवस्त्राणां बहिष्कारस्तदाऽभवत्

मद्यपानविरोधश्च चक्रसंचालनं तथारू'

**1.6 राष्ट्रीय चेतना के अनुकूल पात्र–**

महाकाव्य में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दालन से जुड़े पात्र राष्ट्रीय–चेतना के अनुकूल पात्र माने जायेंगे। ये सभी पात्र देश की भैतिक उन्नति के साथ–साथ उसके आत्मिक और आध्यात्मिक विकास के प्रति भी पूरी तरह से समर्पित और सचेत रहे हैं। उन सभी पात्रों में महात्मा गांधी और मोतीलाल नेहरू आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने, आन्दोलन को प्रभावी बनाने के लिये विभिन्न कार्यनीतियों और कार्ययोजनाओं को लागू करने तथा देश की जनता को देश को आजाद कराने के लिये प्रेरित और प्रभावित करने के दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण पात्र माने गये हैं। इन दोनों महापुरूषों का कार्यनीतियों और कार्ययोजनाओं का अनुगमन करने वाले पात्रों में जवाहर लाल नेहरू सर्वाधिक सशक्त और प्रभावशाली पात्र माने गये हैं।

राष्ट्रीय–चेतना से जुड़े पात्रों में लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय, गोपाल कृष्ण गोखले, आचार्य कृपलानी, सुभाषचन्द्र बोस, सरोजनी नायडू, स्वरूप रानी, और कमला रानी बहुचर्चित पात्र रहे हैं। इन्होंने राष्ट्रीय–चेतना के मार्ग का अनुगमनही नहीं किया है अपितु उसको सकारात्मक नयी दिशा भी प्रदान की है। इन सभी पात्रों ने अपनी स्वततन्त्र पहचान बनायी है। सभी ने स्वाधीनता प्राप्ति को चरम लक्ष्य मानकर उसे प्राप्त करने के लिये एकजुट होकर रचनात्मक प्रयत्न और कार्य किये हैं। महात्मा गांधी ने विभाजित पाकिस्तान को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से आवंटित धनराशि का दुरूपयोग जानकर आमरण अनशन का व्रत अपनाया।

रचनाकार की दृष्टि में महात्मा गांधी का यह संघर्ष व्यक्तिगत न होकर सार्वभैमिक विचारों का रचनात्मक संघर्ष था। महात्मा गांधी के इन विचारों का समर्थन पं. जवाहर लाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस दोनों ने किया। राष्ट्रीय–चेतना को सर्वस्पर्शी बनाने के उद्देश्य से मोतीलाल नेहरू ने हर प्रकार संघर्ष किया। इन संघर्ष काल में मोतीलाल नेहरू, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि देशभक्तों को विदेशी शासकों ने कारावास में डाल दिया। स्वरूप रानी और कमला रानी ने भी राष्ट्रीय–चेतना को पुरूषवर्ग के साथ–साथ नारीवर्ग तक पहुँचाने के उद्देश्य से कारावास का दुःख भोगा। जवाहर लाल नेहरू ने सन् 1921 ई0 में कांग्रेस समिति के सदस्य बनकर कठोर दण्ड की चिन्ता न करते हुये राष्ट्रीय–चेतना को विश्वव्यापी बनाया। हिन्दुस्तान–पाकिस्तान का युद्ध होने पर नेहरू और पटेल का आदेश पाकर भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों को पराजित करके अद्भुत वीरता और पराक्रम का परिचय दिया। रचनाकार ने इस युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों के क्रूर कार्यो और जघन्य अनैतिक कार्यो की ओर भी संकेत किया है। इस विवेचन की पुष्टि निम्नलिखित उदाहरणों से की जा सकती है–

**श्रीगान्धी श्रीपटेलश्च गृहीतौ देशशासकैः**

**अभियोगं विनैवेती कारायाच्च निपापितौ**

**श्रीजवाहरलालस्य वृद्धा माता गुणान्विता**

**सैनिकैदण्डहस्तै स्तै भृंश शिरसि ताड़िता**

**श्रुत्वाऽभूत् सप्रसन्नात्मा यत सानिसपुत्सुका**

**स्त्रिभिः सह कारायं गन्तुमासीत्तदा गृहे**

**पाकिस्तानस्य यददृव्यं पन्चाशत् पंचकोटिकम्**

**विनाशं तत्कृंत दृष्ट्वा भारतीयैनैचापितम्**

**महात्मगान्धिनारव्ध स्वीयमनशनव्रतम**

**मरणान्त विरोध स्वं तदा व्यज्जयितुं भुवि**

**संघर्षोऽयं विचाराणां नतु व्यक्तिगतोऽभवत्**

**जवाहरस्रू 'दासेन' श्री सुभाषेण गान्धिन**

**प्राम्य शासनसंकेत देशीयैवीर सैनिकैः**

**कृतं महादभुतं कर्म लोकविस्मयकारकम्**

**प्राम्य शासनसंकेत देशीयैवीर सैनिकैः**

**कृतं महादभुतं कर्म लोकविस्मयकारकम्**

**पाकाविधान देशस्य योद्धारो लक्षयंख्यकाः**

**रोमान्चकृद दुराचारकारिणः क्रूरकर्मिणः'**

**1.7 निष्कर्ष**

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने अपने ख्याति प्राप्त महाकाव्य में विदेशी शासन और प्रशासन से जुड़े अनेक ऐसे पात्रों का प्रयोग किया है जो ब्रिटिश साम्राज्य को सम्पन्न और समृद्ध देखना चाहते थे और भारत की राष्ट्रीय–चेतना को पूरी तरह से दबाना चाहते थे। इन राष्ट्र विरोधी पात्रों में शासक और प्रशासक वर्गीय पात्रों के साथ–साथ अनेक सैनिक पात्रों का भी प्रयोग हुआ है। इन सैनिक पात्रों ने ब्रिटिश शासक और प्रशासक वग्र से निर्देश पाकर निर्दोष और निहत्थे भारतीयों पर लाठी प्रहार किया, उनको राष्ट्रीय–चेतना से विमुख करने का प्रयत्न किया। उन्हें देश के स्वाधीनता आन्दोलन से दूर रहने के कठोर निर्देश दिये। इन बहुवर्गीय पात्रों के अतिरिक्त रचनाकार ने अनेक ऐसे पात्रों का भी प्रयोग किया है, जो ब्रिटेन में रहकर ही भारत पर शासन कर रहे थे। भारत में समय–समय पर शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से ब्रिटेन में स्थित शासकों ने अनेक कमीशन और एक्ट निर्धारित किये। इनके अलग–अलग प्रतिनिधि सदस्यों के साथ–साथ अध्यक्ष भी नियुक्त किये गये। विभिन्न आयोगों और अधिनियमों को पूरा करने के उद्देश्य से इनके अध्यक्ष और प्रतिनिधि सदस्य भारत आये और इन्होंने बलपूर्वक ब्रिटिश सरकार की नीतियों और कार्य–योजनाओं को लागू कराने का प्रयत्न किया। भारत के राजनेताओं और स्वतन्त्रता–प्रेमी जनता ने इन आयोगों का विरोध किया क्योंकि ये आयोग भारत की स्वाधीनता–प्राप्ति के विरोधी थे। साथ ही साथ पराधीनता की भावना से अनुशासित थे। ब्रिटिश सैनिकों ने विभिन्न प्रकार के अभियोग और आरोप लगाकर भारतीय नेताओं को प्रताड़ित किया। उनको कारावास में डाल दिया। भारत के सभी प्रदेशों, राजधानी, और महानगरों में भारतीयों के मनोबल को तोड़ने के प्रयत्न किये गये। लाठीप्रहार किया गया। स्त्री, पुरूष, बच्चे सभी को प्रताड़ित किया गया। इस प्रकार विदेशी शासकों और उनके प्रशासकों ने योजनाबद्ध पद्धति से भारतवासियों की राष्ट्रीय–मुक्ति आन्दोलन की भावना और चेतना को दबाने का प्रयत्न किया।

## ग्रन्थ–सूची


- निरंजन' भगवान सह 'जो या देहि रहित है, सो है रमिता राम' हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- राजेश्री, 'भारत में भाषायी समन्वयन वेफ निहितार्थ एवं लोकतांत्रिक संभावनाएँ'हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)

- पंकज कुमार, मधुकर सह की कहानीरू समकालीन संदर्भ' हिन्दी साहित्य निवेफतन, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद (1999) 'कबीर'राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 7 आवृत्ति
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद(1991) 'हिन्दीसाहित्यकीभूमिका' राजकमलप्रकाशन, दिल्ली, संस्करण
- डा०नगेंद्र(2012) 'हिन्दीसाहित्यकाइतिहास' मयूरपेपरबैक्स, दिल्ली, संस्करण
- कश्यप, सुभाष (2016) 'संवैधानिक राजनितिक व्यवस्था' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
- कश्यप' सुभाष (2012) 'हमारा संविधान' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
- विश्वनाथ, (2000) 'साहित्यदर्पण', डॉ. सप्तव्रतसिंह, चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, दशमसंस्करण.
- दण्डी, विश्वनाथ'(2000) 'डॉ. सप्तव्रतसिंह', चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, दशमसंस्करण.
- बाग्भट्ट, (1938) 'काव्यानुशासन'सम्पा. रसिकलालसी. परिखश्रीमहावीरजैन, विद्यालय, बम्बईप्रथमवृत्ति
- व्यास, डॉ. भोलाशंकरव्यास(2025वि.)'संस्कृतकविदर्शन'चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी–1, तृतीयसंस्करण
- उपाध्याय, आचार्यबलदेव(1963) 'संस्कृतकविचर्चा'चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी–1
- जकारिया, आर.(1960) 'जवाहरलालनेहरूआत्मकथा'पब्लिशिंगहाऊस, जवाहरनगर, दिल्ली
- गेचीऐलनएण्डअलविन,(1960) 'नेहरूमोतीलालऔरजवाहरलाल'पब्लिशिंगहाऊस, दिल्ली
- नेहरू, जवाहरलाल(1949) 'ओटोग्राफी– भारतमेंआधुनिकघटनायें'चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी
- निर्मलकर,डा० स्नेहलता कौस्तुभ पांडेय, 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन' हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- बडत्या, सूरज प्रकाश 'प्राचीन एवं आधुनिक गैरवैदिक चिन्तन पद्धतिः एक विश्लेषण,हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)